वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 128
ISBN 978-93-80353-72-2

दीपावली पूजन

–: रचयित्री :–

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

भगवान शांतिनाथ जन्म, दीक्षा व निर्वाणकल्याणक दिवस–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के अन्तर्गत भगवान महावीर स्वामी के 2610वें जन्मजयंती महोत्सव–चैत्र सुदी त्रयोदशी के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweeep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweeep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

छठा संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2537	मूल्य
2200 प्रतियाँ	चैत्र सुदी त्रयोदशी, 16 अप्रैल 2011	20/-रुपये

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण-1991 से चतुर्थ संस्करण-2004 तक प्रकाशित-8800 प्रतियाँ
पंचम संस्करण (सन् 2008)-2200 प्रतियाँ

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना.....

–क्षुल्लक मोतीसागर

भारतवर्ष धर्मप्रधान देश है, जहाँ दीपावली पर्व का विशेष ही महत्व है। हिन्दू समाज श्री रामचन्द्र जी के अयोध्या वापस आने के प्रतीक स्वरूप दीप प्रज्ज्वलित करके दीपावली पर्व मनाता है एवं गणेश–लक्ष्मी की पूजा करता है।

जैन मान्यता के अनुसार इस युग के अंतिम २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण प्राप्ति के उपलक्ष्य में देवताओं द्वारा दीप जलाकर निर्वाण महोत्सव मनाने के प्रतीक स्वरूप दीपावली पर्व मनाया जाता है। जिस कार्तिक कृष्णा अमावस्या की प्रातःकाल भगवान महावीर को निर्वाण की प्राप्ति हुई, उसी दिन सायंकाल उनके मुख्य गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी अतः वास्तविकता यह है कि जैनधर्म में गौतम गणधर एवं केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने दीपावली के दिन गौतम गणधर एवं केवलज्ञान महालक्ष्मी की पूजा करने की प्रेरणा जैन समाज को प्रदान की है, उसी परिप्रेक्ष्य में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर द्वारा सरस्वती एवं केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी की मूर्ति तैयार कराकर प्रदान की जाती हैं। पिछले ४–५ वर्षों में लोगों ने इन सरस्वती–लक्ष्मी की पूजा–अर्चना करके असीम लाभ प्राप्त किया है। इस पुस्तक में पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रस्तुत क्रम के अनुसार श्रावकों को दीपावली (कार्तिक कृष्णा अमावस्या) की प्रातःकाल सर्वप्रथम नवदेवता की पूजन करके भगवान महावीर की पूजन करनी चाहिए पश्चात् निर्वाणकाण्ड पढ़कर निर्वाणलाडू चढ़ाना चाहिए पुनः शाम के समय गौतम गणधर पूजा एवं केवलज्ञान महालक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।

सरस्वती एवं केवलज्ञानरूपी महालक्ष्मी की पूजन से जहाँ लौकिक सुख–समृद्धि की प्राप्ति होती है, वहीं आध्यात्मिक क्षेत्र में सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होकर परम्परा से मोक्षलक्ष्मी की प्राप्ति भी संभव है। दीपावली पर्व आप सबके जीवन में लौकिक एवं आध्यात्मिक रूप से उन्नतिकारक हो, यही मंगल भावना है।

दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित किया है पुण्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने

प्रस्तुति–आर्यिका चंदनामती

जब किसी जिन प्रतिमा का दर्शन किया जाता है तो उसकी प्राचीनता ज्ञात होने पर दर्शन करने वाले श्रद्धालु भक्त की भक्ति कुछ विशेष ही हो जाती है, यह सर्वमान्य तथ्य है। वास्तविकता यह है कि जिनप्रतिमा जितनी प्राचीन होती है, उसकी भक्तिभावपूर्वक दर्शन–वंदना करने से उतना ही अधिक फल प्राप्त होता है। वर्तमान काल में यही सत्य हमारे सामने साकाररूप ले रहा है पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के रूप में। १८ वर्ष की अल्प आयु में घर का त्याग कर युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में त्यागमार्ग में कदम बढ़ाने वाली इस लौह–बाला ने त्यागमयी जीवन के जो ५८ वर्ष पूर्ण किए हैं, उनसे एक विशेष प्रकार का अतिशय उनमें उत्पन्न हो गया है। पूज्य माताजी के अनेक कार्यकलापों को देखकर लोग अक्सर कहा करते हैं कि माताजी तो महान पुण्यशालिनी हैं और उस पुण्य के बल पर ही उनके द्वारा इतने बड़े–बड़े कार्य सम्पन्न हो रहे हैं परन्तु वास्तव में पुण्य कहीं बाजार में नहीं मिलता है और न ही किसी दुकान से खरीदा जा सकता है। पूज्य माताजी ने भी यह अपार पुण्य किसी से उधार नहीं लिया है वरन् इन ५८ वर्षों में एक–एक क्षण करके घट में बूँद–बूँद की भाँति उसे अर्जित किया है। ज्ञातव्य है कि सन् १९३४ की शरदपूर्णिमा को टिकैतनगर (बाराबंकी–उ.प्र.) में पिता श्री छोटेलाल जी एवं माता मोहिनी देवी से जन्मी प्रथम कन्यारत्न मैना ने सन् १९५२ में गृहत्याग कर आजन्म ब्रह्मचर्य एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किए पुनः १९५३ में क्षुल्लिका दीक्षा तथा १९५६ में आर्यिका दीक्षा धारण कर **'ज्ञानमती'** नाम प्राप्त किया।

अखण्ड असिधारा व्रत की स्वर्णिम धारा (५९ वर्ष), महाव्रतों को पालन करने की सूक्ष्म चर्या, मोक्षमार्ग के प्रणेता भगवान जिनेन्द्र के प्रति उनके कण–कण में व्याप्त अनुपमेय अपार भक्ति, प्रतिक्षण स्व एवं पर के कल्याण

हेतु अटूट परिश्रम के महायज्ञ में समर्पण उनके इस महान पुण्यरूपी प्रासाद के सुदृढ़ स्तम्भ बने हैं।

किन्हीं नीतिकार का कथन पूर्ण सत्य है-

पुण्यस्य फलमिच्छंति, पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः।
न पापफलमिच्छंति, पापं कुर्वन्ति यत्नतः।।

अर्थात् लोग पुण्य से प्रसूत सुखरूप फल की इच्छा करते हैं परन्तु पुण्य करना नहीं चाहते हैं। वे पापरूप फल को नहीं चाहते हैं परन्तु पाप के संचय में (सदैव) प्रयत्नशील रहते हैं।

देखा जाये तो संसार में यही स्थिति बनी हुई है, लोग समस्त सुख-सम्पत्ति-वैभव के आधारभूत पुण्य क्रियाओं से तो अछूते बने रहते हैं और अपने जीवन में सदैव ऊँचाईयों की अभिलाषा से त्रस्त रहा करते हैं। ऐसे लोगों के लिए पूज्य माताजी का जीवन विशेषरूप से प्रेरणास्पद है।

पूज्य माताजी जिस तीर्थ को छूती हैं, वह आकाश की ऊँचाईयों को छूने लगता है, जिस मिट्टी को छूती हैं, वह सोना बन जाती है, जिस जंगल में पहुँच जाती हैं, वहाँ स्वर्ग बन जाता है, जिस ग्राम की धरती पर चरण रखती हैं, वह मंदिर बन जाता है, जिस व्यक्ति पर उनकी दृष्टि पड़ जाती है, वह अपने जीवन में इंसान से भगवान बनने की ओर अग्रसर हो जाता है और जिस बिन्दु का वह स्पर्श करती हैं, वह सिंधु बनने के लिए चयनित हो जाता है।

यही कारण है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में मात्र एक वर्ष में हुए विशाल निर्माणकार्य को देखकर लोगों के मुख से सहसा निकलता है कि बीसों वर्ष का कार्य मानो स्वयं देवों ने आकर इतने अल्प समय में साकार कर दिया है। वस्तुतः देवोपुनीत इस कार्य को देखकर लोग आश्चर्य से दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं। पूज्य माताजी के साथ जुड़ने वाले भक्तों का समर्पण भी इसीलिए रहता है क्योंकि वह मात्र मंदिर या तीर्थ नहीं बना रही हैं वरन् जैन शासन की प्राचीन संस्कृति एवं अतिप्राचीन इतिहास की सुरक्षा में आचार्य कुन्दकुन्द एवं अकलंक देव जैसे उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। साररूप में यदि कहा जाये तो उनके द्वारा विशाल साहित्य सृजन, हस्तिनापुर-अयोध्या-मांगीतुंगी-

अहिच्छत्र-प्रयाग-कुण्डलपुर-काकंदी जैसे अनेकानेक तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास, जैन धर्म की प्राचीनता को जन-जन तक पहुँचाने के लिए किए गए महान प्रभावनात्मक कार्य, जिनेन्द्र भगवान, जिनशासन एवं जिनवाणी के प्रति उनकी अटूट भक्ति एवं समर्पण के ही प्रतीक हैं। प्रारंभ से ही जिनशासन को अपना सर्वस्व मानने वाली पूज्य माताजी ने अपना हर कदम आगमानुकूल एवं अपने मोक्षमार्ग को प्रशस्त करने के लिए बढ़ाया है। प्रतिदिन उनके मुख से यही निकला करता है कि हे भगवन्! यदि मेरे द्वारा किंचित् भी आपके प्रति भक्ति एवं गुणानुरागरूप क्रियाएँ सम्पन्न हो रही हैं, तो उनके पीछे मेरा एकमात्र यही स्वार्थ निहित है कि आने वाले कुछ ही भवों में मैं इस प्रकार की उच्चतम साधना एवं ध्यानाग्नि का प्रश्रय ले सकूँ कि मेरे समस्त कर्म मलों की शृँखला चूर-चूर होकर मेरी शुद्ध चेतनस्वरूप आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति हो सके।

तीर्थंकर भगवन्तों एवं आगम में वर्णित मोक्ष पथ की वर्तमानकालीन साधना के प्रति उनकी अतिशय भक्ति का ही यह परिणाम है कि तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणकों की भूमियों—विशेषरूप से संस्कृति की उद्गमस्थल-जन्मभूमियों के संरक्षण एवं विकास के प्रति उनके हृदय में विशेष संकल्प बना हुआ है। पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या, तीन तीर्थंकरों की जन्मभूमि हस्तिनापुर, भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही, भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) एवं ९वें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी (गोरखपुर) उ.प्र. में जो विकास पूज्य माताजी की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ है, वह भला किसकी नजरों से छिपा है। उनकी कर्मठता एवं संकल्पशक्ति के विषय में समाज को पूर्ण विश्वास है कि जिस कार्य को माताजी हाथ में लेंगी, वह निश्चित रूप से बहुत ही सुन्दर एवं व्यवस्थित रूप में अल्प समय में ही पूर्ण हो जायेगा, इसीलिए पूज्य माताजी के आह्वान पर समाज भी हृदय से उस उद्देश्यात्मक कार्य के प्रति समर्पित हो जाता है। ठीक ही है कि जो वास्तव में कार्य करके दिखाते हैं, उनके प्रति श्रद्धा का भाव सहज ही उमड़ता है।

पुण्य से ईर्ष्या न करके आदर्श को ग्रहण करें—

जो अपने जीवन में ऐसे महान पुरुषार्थ एवं उससे उपार्जित पुण्य से अस्पर्शित

रहते हैं, ऐसे कुछ दिग्भ्रमित लोग कभी-कभी इन ऊँचाइयों को नहीं समझ पाते हैं और दीर्घकालीन तपस्या से प्राप्त पुण्य के प्रताप से पूज्य माताजी द्वारा सम्पन्न कराये जा रहे चमत्कारिक निर्माण एवं प्रभावनात्मक कार्यकलापों को देख-सुनकर जहाँ यद्वा-तद्वा प्रलाप करने लगते हैं, वहीं असंख्य लोग प्रशंसा और साधुवाद देते हुए भाव विह्वल होते देखे जाते हैं, यह सब उनके अपने-अपने पाप-पुण्य कर्म का ही उदय मानना पड़ेगा क्योंकि महान कार्यों में लगे हुए संत हमारे ईर्ष्या-द्वेष के नहीं वरन् साधुवाद के ही पात्र होते हैं। जहाँ उनकी अनुमोदना बिना कुछ किए भी हमारे पुण्य को सहस्रगुणा वर्धित कर देती है, वहीं व्यर्थ प्रलाप एवं प्राणी की अवनति को भी आश्वस्त कर सकती है। दुराग्रहों को छोड़कर अपने मानस को इस प्रकार सुव्यवस्थित करना चाहिए कि यदि हम स्वयं बहुत अधिक करने में समर्थ नहीं हैं तो समाज को अपनी कर्मठता के माध्यम से महान धरोहर प्रदान करने वाले महान व्यक्तित्वों की अनुमोदना करें और यदि इतना भी न हो सके तो कम से कम व्यर्थ निंदा के कंटकों को विकीर्ण करने का दुष्प्रयास तो न करें। प्रारंभ से ही गुणीजनों के गुणों को ग्रहण करने का जो भाव हमारी शाश्वत संस्कृति द्वारा हममें आरोपित किया जाता है उसको अपनाते हुए पुण्य से ईर्ष्या नहीं वरन् आदर्श को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। विश्व में प्राचीनतम होते हुए भी जैनधर्म का प्रकाश मात्र जुगनू की भाँति ही देखने में आता है अतः इस महान धर्म की छत्रछाया में मोक्षमार्ग को प्राप्त करने वाले हम सभी का कृतज्ञता रूप में यही कर्तव्य है कि हमें अपनी शक्ति के अनुसार जितनी हो सके, उतनी सच्ची रचनात्मक धर्मप्रभावना करनी चाहिए और कार्य में संलग्न महापुरुषों के प्रति सदैव आदरभाव रखना चाहिए। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने सुदीर्घ तपस्वी जीवन में इसी सूत्र का परिपालन करते हुए सदैव सृजन में अपनी शक्ति लगाई है एवं परनिन्दा इत्यादि में अपने क्षण कभी भी विनष्ट नहीं किये हैं। हमारा महानतम सौभाग्य है कि ऐसी महान आत्मा का साक्षात् सानिध्य हमें इस कलिकाल में भी प्राप्त हो रहा है। पूज्य माताजी के चरण-कमलों में बारम्बार अभिवंदन करते हुए जिनेन्द्र प्रभु से यही हार्दिक प्रार्थना है कि यह पुण्यधारा निरन्तर यूँ ही हम सबको सराबोर करती रहे।

दीपावली पर्व एवं वीर निर्वाण संवत् का नूतन वर्षाभिनन्दन

लेखिका–गणिनी ज्ञानमती

जैन इतिहास के अनुसार आज से (सन् २०११ से) २५३७ वर्ष पूर्व तीर्थंकर भगवान महावीर ने बिहार प्रान्त के पावापुरी नगर में जलमंदिर से समस्त कर्मों का नाश कर मोक्षधाम को प्राप्त किया था। जैसा कि आचार्यश्री पूज्यपाद स्वामी ने निर्वाणभक्ति में कहा है—

पावापुरस्य बहिरुन्नतभूमिदेशे, पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये।
श्रीवर्धमानजिनदेव इति प्रतीतो, निर्वाणमाप भगवान् प्रविधूतपाप्मा।।२४।।

पावापुर के बाह्य सरोवर, पद्म कुमुदनी से शोभित।
मध्यभाग में उसके उन्नत, भूमि देश में प्रभु राजित।।
श्रीमन् वर्धमान जिनदेवा, त्रिभुवन विश्रुत पाप रहित।
कर्म अघाती धो करके, निर्वाण गये भगवन् सन्मति।।

इसी स्मृति में प्रतिवर्ष भक्तगण दीपावली के दिन कार्तिक कृष्णा अमावस्या की प्रभात बेला में पावापुरी के जलमंदिर में भक्तिपूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाते हैं। वर्तमान में श्वेताम्बर समुदाय की कमेटी ने पावापुरी जलमंदिर के पास बोर्ड लगा दिया है कि—

"आज से लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व जैनधर्म के चौबीसवें अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का निर्वाण होने पर देवताओं द्वारा यहाँ पर अंतिम संस्कार किया गया। इस पवित्र स्थान की भस्म व मिट्टी को उठाते-उठाते ही एक बड़ा सा गड्ढा बन गया, जिसने एक विशाल सरोवर का स्थान ले लिया। इस सरोवर में कमल रहने से इसे कमल सरोवर भी कहते हैं। वर्तमान में इस सरोवर की लम्बाई १४५१ फुट एवं चौड़ाई १२२३ फुट है।"

दिगम्बर जैन परम्परानुसार उपर्युक्त वर्णन पूर्णतया निराधार है, तदनुसार महावीर स्वामी ने इसी जल मंदिर में ही दो दिन का योग निरोध करके कार्तिक कृष्णा अमावस की प्रत्यूष बेला में मोक्ष प्राप्त किया उसके पश्चात् सौधर्म इन्द्र

आदि सभी देवताओं ने मिलकर उनका निर्वाणकल्याणक महोत्सव मनाया पुनः अग्निकुमार देवों ने अपने मुकुट से अग्नि निकालकर भगवान् के शरीर का अंतिम संस्कार किया था। वहाँ पर इन्द्र ने वज्र से भगवान् के चरण उत्कीर्ण किये थे, उस विषय में भी पूज्य आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने स्वयंभूस्तोत्र में लिखा है—

ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलंकृतः।
मेघपटलपरिवीत तटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा।।१२७।।
वहतीति तीर्थमृषिभिश्च, सततमभिगम्यतेऽद्य च।
प्रीतिविततहृदयैः परितो, भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः।।१२८।।

अर्थात् गिरनार पर्वत से भगवान नेमिनाथ के मोक्षगमन के पश्चात् इन्द्रों ने भगवान की निर्वाण कल्याणक पूजा के बाद गिरनार पर्वत पर वज्र से चरण उत्कीर्ण किया था। इसी प्रमाण को उद्धृत करते हुए मेरे दीक्षा गुरुवर परमपूज्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज कहते हैं कि—इसी प्रकार से पावापुरी सरोवर के मध्य मणिमयी शिला से भगवान के मोक्ष जाने के बाद इन्द्रों ने वज्र से यहाँ पर भी चरणचिन्ह उत्कीर्ण करके इस शिला को सिद्धशिला के समान पूज्य पवित्र बनाया था।

इस दीपावली पर्व के महत्त्व एवं वीर निर्वाण संवत् के बारे में मैंने "मेरी स्मृतियाँ" ग्रंथ में भी विस्तार से दिया है ताकि पढ़ने वालों को जैनधर्म से संबंधित इतिहास की जानकारी मिल सके।

नूतन-वर्ष अभिनंदन—

आज भारत देश में वीरनिर्वाण संवत्, विक्रम संवत्, शालिवाहन शक और ईसवी सन् प्रचलित हैं। इनके प्रथम दिवस को वर्ष का प्रथम दिन मानकर नववर्ष की मंगल कामनाएँ की जाती हैं। जैन धर्मानुयायी महानुभावों को किस संवत् का कौन सा दिवस नववर्ष का मंगल दिवस मानना चाहिए? इस विषय पर विचार करना चाहिए।

आज ईसवी सन् अत्यधिक प्रचलित है। प्रायः केलेंडर, तिथि-दर्पण और डायरियां भी इसी सन् से छपने लगी हैं। वास्तव में अंग्रेजों ने अपने

भारत पर शासन करके अपना ऐसा प्रभाव छोड़ा है कि उसे मिटाना असंभव है। खैर! कोई बात नहीं, १ जनवरी से प्रति वर्ष ईसवी सन् प्रारंभ होता है।

कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा गुजरात में विक्रम संवत् को अधिक महत्व दिया जाता है। मैंने श्रवणबेलगोल में देखा, जो लोग वहीं रहकर भी ऊपर जाकर भगवान का दर्शन नहीं करते थे, वे भी जैन बंधु चैत्रवदी अमावस्या (दक्षिण व गुजरात के अनुसार फाल्गुन कृ. अमावस्या) की रात्रि में ऊपर पहाड़ पर जाकर सोते हैं और प्रातः उठते ही भगवान बाहुबली का दर्शन कर नूतन-वर्ष की मंगल-कामना करते हुए नीचे उतरते हैं। चैत्र शुक्ला एकम् से विक्रम संवत् का नया वर्ष शुरू होता है। आज पंचांग इसी संवत् से चल रहे हैं।

वर्तमान में तो वीरनिर्वाण महोत्सव की चर्चा जैन क्या जैनेतरों में भी सारे देश में फैल चुकी है। सन् १९७४ में भगवान महावीर का पच्चिससौवां निर्वाण महोत्सव भी एक वर्ष तक जैनों के चारों सम्प्रदायों के महारथियों ने आगे होकर मनाया, जिससे जैन के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के साथ अहिंसा धर्म का प्रचार-प्रसार खूब ही हुआ है। अब तिथि-दर्पण भी "वीरनिर्वाणसंवत्" से निकाले जाने लगे।

आज जैन समाज में ही नहीं, जैनेतर समाज में भी वीरनिर्वाण दिवस की (दीपावली के दिन) रात्रि में गणेश पूजा और लक्ष्मी पूजा करके दुकान पर नूतन वसना और नूतन बही आदि बदलने की प्रथा है। इस दिन अनेक प्रबुद्ध जैन अपनी-अपनी दुकान पर यंत्र अथवा जिनवाणी रखकर भगवान महावीर की पूजा, सरस्वती की पूजा आदि करके मंगलाष्टक पढ़कर, नूतन बहियों और वसनों पर स्वस्तिक, श्री आदि बनाकर "श्री महावीराय नमः" आदि मंत्र लिखकर, बही बदलने का मुहूर्त करके संवत् लिख देते हैं।

इस दिन लक्ष्मी-गणेश की पूजा के बारे में सही स्थिति का बोध कराने के लिए मैंने श्री गौतम गणधर की पूजा और केवलज्ञान महालक्ष्मी की पूजा, ऐसी दो पूजाएँ बनाई हैं जो "जम्बूद्वीप पूजांजलि" पुस्तक एवं इस "दीपावली पूजन" नामक पुस्तक में प्रकाशित हैं क्योंकि कार्तिक कृ. अमावस्या को प्रातः प्रत्यूष बेला में भगवान महावीर स्वामी ने पावापुरी से निर्वाण प्राप्त

किया था, उसी के उपलक्ष्य में स्वर्ग से इन्द्रों ने, असंख्य देव-देवियों ने आकर यहाँ पावापुरी में भगवान का निर्वाणोत्सव मनाया था और पावापुरी में दीपों को जलाकर उत्सव किया था। उसी समय से आज तक प्रतिवर्ष अपने भारत देश में सायंकाल में सर्वत्र दीपक जलाकर "दीपमालिका" या दीपावली दिवस मनाया जाता है। जैसा कि हरिवंशपुराण में कहा भी है—

ततस्तु लोकः प्रतिवर्षमादरात्प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक्।।२१।।

भगवान के निर्वाण कल्याणक की भक्ति से युक्त संसार के प्राणी इस भरतक्षेत्र में प्रतिवर्ष आदरपूर्वक प्रसिद्ध दीपमालिका के द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने के लिए उद्यत रहने लगे अर्थात् उन्हीं की स्मृति में दीपावली का उत्सव मनाने लगे।।२१।।

यह हुई दीपावली की बात, पुनः जो उसी दिन रात्रि में नूतन बही पूजन के समय लक्ष्मी और गणेश की पूजा की प्रथा है, उसमें भी रहस्य है। उसी दिन पावापुर में भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष जाने के बाद सायंकाल में श्री गौतम गणधर को केवलज्ञान प्रगट हुआ था, तत्क्षण ही इन्द्रों ने आकर उनकी गंधकुटी की रचना करके उनके केवलज्ञान की पूजा की थी। **'गणानां ईशः गणेशः, गणधरः'** ये पर्यायवाची नाम श्री गौतमस्वामी के ही हैं। सब लोग इस बात को न समझकर गणेश और लक्ष्मी की पूजा करने लगे। वास्तव में गणधर देव की, केवलज्ञान महालक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। खास कर जैनों को तो यही कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा का नूतन वर्ष मानना चाहिए। इसी दिन से तिथि दर्पण व केलेंडर छपाना चाहिए।

युगादि—वैसे मेरी दृष्टि में "युगादि दिवस" भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसकी तरफ प्रायः जैन धर्मानुयायियों का लक्ष्य नहीं है। यह मंगलमय दिवस है "श्रावण कृष्णा प्रतिपदा"। यह प्रत्येक युग का आदि दिवस है इसलिए इसे "युगादि" कहा है। उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के छह-छह काल माने हैं। अवसर्पिणी के सुषमा सुषमा, सुषमा, सुषमादुःषमा, दुःषमासुषमा, दुःषमा और अतिदुःषमा। ये ही उत्सर्पिणी में उल्टे क्रम से चलते हैं। जैसे—अतिदुःषमा

आदि। इन सब कालों की समाप्ति आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को होती है और प्रारंभ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से होता है।

इस मंगल दिवस को ही भगवान महावीर की दिव्यध्वनि खिरी थी अतः आज इसे "**वीरशासन जयंती**" दिवस के नाम से मनाने की प्रथा है। इस विषय में आप प्रमाण देखिये (तिलोयपण्णत्ति अध्याय १, पृ. ९ से उद्धृत)—

"एत्थावसप्पिणीए चउत्थकालस्स चरिमभागम्मि।
तेत्तीसवासअडमासपण्णरसदिवससेसम्मि ।।६८।।
वासस्स पढममासे सावणणामम्मि बहुलपडिवाए।
अभिजीणक्खत्तम्मिं य उप्पत्ती धम्मतित्थस्स।।६९।।
सावणबहुले पाडिवरुद्दमुहुत्ते सुहोदये रविणो।
अभिजस्स पढमजोए जुगस्स आदी इमस्स पुढं।।७०।।

यहाँ अवसर्पिणी के चतुर्थ काल के अंतिम भाग में तेतीस वर्ष, आठ माह और पन्द्रह दिन शेष रहने पर वर्ष के श्रावण नामक प्रथम महीने में, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन अभिजित् नक्षत्र के उदित रहने पर धर्मतीर्थ की उत्पत्ति हुई।।६८-६९।।

श्रावण कृष्णा एकम् के दिन रुद्र मुहूर्त के रहते हुए सूर्य का शुभ उदय होने पर अभिजित् नक्षत्र के प्रथम योग में इस युग का प्रारंभ हुआ, यह स्पष्ट है।।७०।।

धवला में भी लिखा है—

सावण-बहुण-पडिवदे, रुद्द-मुहुत्ते सुहोदए रविणो।
अभिजिस्स पढम-जोए, एत्थ जुगाई मुणेयव्वो।।५७।।

श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन, रुद्र मुहूर्त में, सूर्य का शुभ उदय होने पर और अभिजित् नक्षत्र के प्रथम योग में जब युग की आदि हुई, तभी तीर्थ की उत्पत्ति समझना चाहिए।।५७।।

राजगृही नगर का जो स्थान भगवान महावीर की दिव्यध्वनि से पवित्र हुआ था, उसके बारे में भी तिलोयपण्णत्ति (अध्याय १, पृ. ८) में वर्णन आया है—

सुरखेयरमणहरणे, गुणणामे पंचसेलणयरम्मि।
विउलम्मि पव्वदवरे, वीरजिणो अट्ठकत्तारो।।६५।।

चउरस्सो पुव्वाए, रिसिसेलो दाहिणाए वेभारो।
णइरिददिसाए विउलो, दोण्णि तिकोणट्ठिदायारा।।६६।।
चावसरिच्छोछिण्णो, वरुणाणिलसोमदिसविभागेसु।
ईसाणाए पंडू वण्णा सव्वे कुसग्गपरियरणा।।६७।।

अर्थ—देव और विद्याधरों के मन को मोहित करने वाले और सार्थक नाम से प्रसिद्ध पंचशैल (पांच पहाड़ों से सुशोभित) नगर अर्थात् राजगृही नगरी में, पर्वतों में श्रेष्ठ विपुलाचल पर्वत पर श्रीवीरजिनेन्द्र अर्थशास्त्र के कर्ता हुए।।६५।।

राजगृह नगर के पूर्व में चतुष्कोण ऋषिशैल, दक्षिण में वैभार और नैऋत्य दिशा में विपुलाचल पर्वत है। ये दोनों वैभार और विपुलाचल पर्वत त्रिकोण आकृति से युक्त हैं।।६६।।

पश्चिम, वायव्य और सोम (उत्तर) दिशा में फैला हुआ धनुष के आकार वाला छिन्न नाम का पर्वत है और ईशान दिशा में पाण्डु नाम का पर्वत है। उपर्युक्त पाँचों ही पर्वत कुशाग्रों से वेष्टित हैं।।६७।।

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि "श्रावण कृष्णा प्रतिपदा" युग की आदि है। भगवान महावीर के मोक्ष जाने के बाद पाँचवां काल प्रवेश होने में तीन वर्ष, आठ माह, पन्द्रह दिन बाकी रहे थे। तीन वर्ष, कार्तिक शुक्ला के पन्द्रह दिन और मगसिर से आषाढ़ तक आठ माह गिनने चाहिए।

कर्नाटक में लोग चैत्र शु. १ को ही "युगादि अब्बा" कहते हैं किन्तु वह तो विक्रमादित्य राजा से चला है अतः वह "युगादि अब्बा" न होकर श्रावण कृष्णा एकम् ही युगादि पर्व है। दक्षिण में पर्व को "अब्बा" कहते हैं।

इसे यहाँ बताने का मेरा अभिप्राय यही है कि आप जैन लोग वीरनिर्वाण संवत् से ही "नूतन वर्ष" मनावें तथा श्रावण कृष्णा एकम् को "वीरशासन जयन्ती" और युगादि दिवस-पर्व अवश्य मनावें। यदि जैन ही अपनी संस्कृति का प्रचार-प्रसार नहीं करेंगे, तो भला और कौन करेंगे? इसलिए वीर निर्वाण के दिन रात्रि में जैन विधि से बही और वसना आदि बदलकर कार्तिक शुक्ला एकम् से "नूतन वर्ष" मानना चाहिए तथा नव संवत्सर की पूजा आदि करके अपने वर्ष को मंगलमय बनाना चाहिए।

भगवान महावीर निर्वाणभूमि-पावापुरी जल मंदिर

प्रस्तुति—गणिनी ज्ञानमती

पावापुरी में सरोवर के मध्य स्थित जल मंदिर ही भगवान महावीर की निर्वाणभूमि है।

श्री पूज्यपाद आचार्य ने निर्वाणभक्ति में कहा है—

पद्मवनदीर्घिकाकुल-विविधद्रुमखण्डमण्डिते रम्ये।
पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।
कार्तिककृष्णस्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्य कर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्-व्यजरामरमक्षयं सौख्यम् ।।१७।।
परिनिर्वृतं जिनेन्द्रं, ज्ञात्वा विबुधा ह्याथाशु चागम्य।
देवतरुरक्तचंदन - कालागुरुसुरभिगोशीर्षैः ।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटानलसुरभिधूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि, गता दिवं खं च वनभवने।।१९।।

पुनश्च—

पावापुरस्य बहिरुन्नतभूमिदेशे, पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये।
श्रीवर्द्धमानजिनदेव इति प्रतीतो, निर्वाणमाप भगवान् प्रविधूतपाप्मा।।२४।।

श्रीगुणभद्र आचार्य ने उत्तरपुराण में कहा है—

क्रमात्पावापुरं प्राप्य मनोहरवनान्तरे।
बहूनां सरसां मध्ये महामणिशिलातले।।५०९।।
स्थित्वा दिनद्वयं वीतविहारो वृद्धनिर्जरः।
कृष्णकार्तिकपक्षस्य चतुर्दश्यां निशात्यये।।५१०।।
स्वातियोगे तृतीयेद्ध-शुक्लध्यानपरायणः।
कृतत्रियोगसंरोधः समुच्छिन्नक्रियं श्रितः।।५११।।
हताघातिचतुष्कः सन्नशरीरो गुणात्मकः।
गन्ता मुनिसहस्रेण निर्वाणं सर्ववाञ्छितम् ।।५१२।।

तदेव पुरुषार्थस्य पर्यन्तोऽनन्तसौख्यकृत् ।
अथ सर्वेऽपि देवेन्द्रा वह्नीन्द्रमुकुटस्फुरत् ।।५१३।।
हुताशनशिखान्यस्त-तद्देहा मोहविद्विषम् ।
अभ्यर्च्य गन्धमाल्यादि-द्रव्यैर्दिव्यैर्यथाविधि।।५१४।।
वन्दिष्यन्ते भवातीतमर्थ्यैर्वन्दारवः स्तवैः।
वीरनिर्वृतिसम्प्राप्तदिन एवास्तघातिकः।।५१५।।
भविष्याम्यहमप्युद्यत्केवलज्ञानलोचनः।
भव्यानां धर्मदेशेन विहृत्य विषयांस्ततः।।५१६।।

(उत्तरपुराण, पर्व ७६)

यहां अभिप्राय यह है कि पावापुरी के मनोहर नाम के उद्यान में कमलों से व्याप्त सरोवर के मध्य महामणिमयी शिला पर भगवान विराजमान हुए, उस समय समवसरण विघटित हो चुका था। श्रीविहार बंद कर दो दिन तक ध्यान में लीन हुए महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के अंत में अघातिया कर्मों को नष्ट कर निर्वाणपद प्राप्त कर लिया। तभी सौधर्मेन्द्र आदि इन्द्रों ने अग्निकुमार इन्द्र के मुकुट के अग्रभाग से निर्गत अग्नि पर प्रभु का शरीर स्थापित कर दिव्य चन्दन आदि के द्वारा पूजा करके संस्कार कर दिया। उसी दिन गौतमस्वामी को वहीं पर केवलज्ञान प्रगट हुआ है।

हरिवंशपुराण में भी यही लिखा है एवं दीपावली पर्व तभी प्रारंभ हुआ, ऐसा कहा है—

जिनेंद्रवीरोऽपि विबोध्य संततं, समन्ततो भव्यसमूहसन्ततिम् ।
प्रपद्य पावानगरीं गरीयसीं, मनोहरोद्यानवने तदीयके।।१५।।
चतुर्थकालेऽर्धचतुर्थमासकै - र्विहीनताविश्चतुरब्दशेषके ।
स कार्तिके स्वातिषु कृष्णभूतसु-प्रभातसन्ध्यासमये स्वभावतः।।१६।।
अघातिकर्माणि निरुद्धयोगको, विधूय घातीन्धनवद् विबंधनः।
विबन्धनस्थानमवाप शंकरो, निरन्तरायोरुसुखानुबन्धनम् ।।१७।।
स पञ्चकल्याणमहामहेश्वरः, प्रसिद्धनिर्वाणमहे चतुर्विधैः।
शरीरपूजाविधिना विधानतः, सुरैः समभ्यर्च्यत सिद्धशासनः।।१८।।

ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया, सुरासुरैर्दीपितया प्रदीप्तया।
तदा स्म पावानगरी समन्ततः, प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते।।१९।।
तथैव च श्रेणिकपूर्वभूभुजः, प्रकृत्य कल्याणमहं सहप्रजाः।
प्रजग्मुरिन्द्राश्च सुरैर्यथायथं, प्रयाचमाना जिनबोधिमर्थिनः।।२०।।
ततस्तु लोकः प्रतिवर्षमादरात्, प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं, जिनेंद्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक्।।२१।।

(हरिवंशपुराण सर्ग ६६)

सार यही है कि भगवान महावीर पावापुरी के मनोहर उद्यान में विराजमान हुए। जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ मास बाकी रहे, तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातः—उषाकाल के समय स्वभाव से योग निरोधकर शुक्लध्यान के द्वारा सर्वकर्म नष्ट कर निर्वाण को प्राप्त हो गये। उस समय चार निकाय के देवों ने विधिपूर्वक भगवान के शरीर की पूजा की। अनन्तर सुर-असुरों द्वारा जलायी हुई बहुत भारी देदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावानगरी का आकाश सब ओर से जगमगा उठा। श्रेणिक आदि राजाओं ने भी प्रजा के साथ मिलकर भगवान के निर्वाणकल्याणक की पूजा की पुनः रत्नत्रय की याचना करते हुए सभी इन्द्र, मनुष्य आदि अपने-अपने स्थान चले गये।

उस समय से लेकर भगवान के निर्वाण कल्याणक की भक्ति से युक्त संसार के प्राणी इस भरतक्षेत्र में प्रतिवर्ष आदरपूर्वक प्रसिद्ध दीपमालिका के द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने के लिए उद्यत रहने लगे अर्थात् भगवान के निर्वाणकल्याणक की स्मृति में दीपावली पर्व मनाने लगे।

इन्द्र ने प्रभु के चरण उत्कीर्ण किए—

एक प्रकरण हरिवंशपुराण में आया है कि—

जब भगवान नेमिनाथ गिरनार पर्वत से निर्वाण प्राप्त कर चुके, तब इन्द्रों ने भगवान की निर्वाणकल्याणक पूजा के बाद गिरनार पर्वत पर वज्र से चरण उत्कीर्ण कर इस लोक में पवित्र सिद्धशिला का निर्माण किया तथा उसे जिनेन्द्र भगवान के लक्षणों के समूह से युक्त किया। यथा—

ऊर्जयन्तगिरौ वज्री वज्रेणालिख्य पावनीम् ।
लोके सिद्धशिलां चक्रे जिनलक्षण पंक्तिभिः।।१४।।
(हरिवंश पुराण सर्ग ६५)

श्री समन्तभद्रस्वामी ने भी स्वयंभूस्तोत्र में लिखा है—

ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलंकृतः।
मेघपटलपरिवीत तटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा।।१२७।।
वहतीति तीर्थमृषिभिश्च, सततमभिगम्यतेऽद्य च।
प्रीतिविततहृदयैः परितो, भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः।।१२८।।

बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्रीशांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज कहते थे कि—इसी प्रकार से पावापुरी सरोवर के मध्य मणिमयी शिला से भगवान के मोक्ष जाने के बाद इन्द्रों ने वज्र से यहाँ पर भी चरणचिन्ह उत्कीर्ण करके इस शिला को सिद्धशिला के समान पूज्य पवित्र बनाया था।

एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि भगवान केवलज्ञान होने के बाद पाँच हजार धनुष—बीस हजार हाथ प्रमाण ऊपर आकाश में अधर पहुंच जाते हैं। अधर में ही कुबेर द्वारा समवसरण की रचना की जाती है। जब भगवान श्रीविहार करते हैं तब समवसरण विघटित हो जाता है और भगवान आकाश में अधर चलते हैं तथा देवगण प्रभु के चरणों के नीचे स्वर्णमयी दिव्य कमलों की रचना करते रहते हैं। निर्वाणप्राप्ति के पूर्व भी जब भगवान योग निरोध करते हैं तब वे आकाश में अधर ही रहते हैं फिर भी उनके ठीक नीचे की भूमि भगवान की निर्वाणभूमि मानी जाती है चूँकि सिद्ध भगवान सिद्धशिला पर भी ठीक उसी भूमि के ऊपर विराजमान हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि भगवान महावीर स्वामी जहाँ से मोक्ष गये हैं ठीक वहीं पर उनके शरीर का संस्कार किया गया है और वहीं पर सरोवर के मध्य मणिमयी शिला पर इन्द्रों ने चरण उत्कीर्ण किये थे। ऐसे ही सम्मेदशिखर पर्वत के सभी टोकों पर इन्द्रों द्वारा चरण उत्कीर्ण किये गये हैं ऐसा मानना चाहिए।

ऐसी सिद्धभूमि पावापुरी को मेरा अनन्त-अनन्त बार नमस्कार होवे।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृ.
१. दीपावली पूजन विधि	१९
२. नवदेवता पूजा	२२
३. भगवान महावीर पूजन	२७
४. निर्वाणकाण्ड भाषा	३३
५. गौतम गणधर पूजा	३९
६. केवलज्ञान महालक्ष्मी पूजा	४४
७. दीपावली पूजा विधि नं. २	४८
८. वीर निर्वाण संवत्सर पूजा	५०
९. पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा	५५
१०. भजन	६१
११. भजन (अंग्रेजी)	६२
१२. भजन	६३
१३. महावीर स्वामी की आरती	६४

दीपावली पूजन

(१)

दीपावली–पूजा विधि

भगवान महावीर सब ओर से भव्यों को सम्बोध कर पावा नगरी पहुँचे और वहाँ ''मनोहर उद्यान'' नाम के वन में विराजमान हो गये। जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ माह बाकी थे, तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातःकाल (उषाकाल) के समय अघातिया कर्मों को नाश कर भगवान कर्म बन्धन से मुक्त होकर मोक्षधाम को प्राप्त हो गये। इन्द्रादि देवों ने आकर उनके शरीर की पूजा की। उस समय देवों ने बहुत भारी देदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावा नगरी को सब तरफ से प्रकाशयुक्त कर दिया। उस समय से लेकर आज तक लोग प्रतिवर्ष दीपमालिका द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने लगे।[1] उसी दिन सायंकाल में श्री गौतमस्वामी को केवलज्ञान प्रगट हो गया, तब देवों ने आकर गंधकुटी की रचना करके गौतमस्वामी की एवं केवलज्ञान की पूजा की। इसी उपलक्ष्य में लोग सायंकाल में दीपकों को

१. हरिवंशपुराण, सर्ग ६६, पृष्ठ ८०५।

जलाकर पुनः नयी बही आदि का मुहूर्त करते हुए गणेश और लक्ष्मी की पूजा करने लगे हैं। वास्तव में ''गणानां ईशः गणेशः= गणधरः'' इस व्युत्पत्ति के अनुसार बारह गणों के अधिपति गौतम गणधर ही गणेश हैं ये विघ्नों के नाशक हैं और उनके केवलज्ञान विभूति की पूजा ही महालक्ष्मी की पूजा है।

कार्तिक वदी चौदश की पिछली रात्रि में अर्थात् अमावस्या में प्रभात में पौ फटने के पहले ही आज भी पावापुरी में निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है अतः अमावस्या के दिन प्रातः चार बजे से जिन मंदिर में पहुँचकर भगवान महावीर का अभिषेक करके नित्य पूजा में नवदेवता या देवशास्त्र गुरु की पूजा करके भगवान महावीर की पूजा करनी चाहिए। उस पूजा में गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान इन चार कल्याणकों के अर्घ्य चढ़ाकर इसी पुस्तक में आगे मुद्रित निर्वाण की भाषा पढ़कर पुनः निर्वाण कल्याणक का अर्घ्य पढ़कर निर्वाणलाडू चढ़ाकर जयमाला पढ़नी चाहिए। अवकाश हो तो निर्वाण क्षेत्र पूजा करें। अनन्तर शांति पाठ विसर्जन करके पूजा पूर्ण करनी चाहिए। उषा बेला में निर्वाणलाडू चढ़ाते समय घी के चौबीस दीपक जलाने की भी परम्परा है।

सायंकाल में दीपकों को प्रज्वलित करते समय निम्नलिखित मंत्र बोलना चाहिए—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोहान्धकारविनाशनाय ज्ञानज्योति प्रद्योतनाय दीपपंक्तिं प्रज्वालयामीति स्वाहा।

पुनः प्रज्वलित दीपकों को लेकर सबसे पहले मंदिर जी में रखना चाहिए अनन्तर घर में, दुकान आदि में सर्वत्र दीपकों को सजाकर दीपमालिका उत्सव मनाना चाहिए।

बही पूजन —

पुनः स्थिर लग्न में, शुभमुहूर्त में दुकान पर पूजन, बही पूजन करनी चाहिए। दुकान पर पवित्र स्थान पर मेज पर सिंहासन में विनायक यंत्र रखकर जिनवाणी विराजमान करनी चाहिए पुनः सामने एक चौकी, पूजन

सामग्री, हल्दी, सुपाड़ी, सरसों, दूर्वा, शुद्ध केसर, घिसा चंदन आदि रखकर पूजा शुरू करनी चाहिए। इस समय नूतन बही, रजिस्टर आदि रख लेना चाहिए, उसमें स्वस्तिक आदि बना लेना चाहिए। जैसे —

''श्री'' का पर्वताकार[१] लेखन, श्रीऋषभाय नमः श्रीवर्धमानाय नमः, श्रीगौतमगणधराय नमः, श्रीकेवलज्ञान महालक्ष्म्यै नमः मंत्र लिखना चाहिए।

पुनः मंगलाष्टक पढ़कर नवदेवता की पूजा करके गौतम गणधर की पूजा करके "केवलज्ञानलक्ष्मी" की पूजा करनी चाहिए। बाद में शांति पाठ और विसर्जन करके परिवार के सभी लोगों को तिलक लगाना चाहिए, यह संक्षिप्त विधि है।

इसमें शांति पाठ के पहले नूतन बही, रुपयों की थैली आदि में पुष्पांजलि क्षेपण करते समय अग्रलिखित संकल्प विधि पढ़नी चाहिए।

ॐ आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.....प्रदेशे.....ग्रामे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे अमावस्यायां तिथौ वीरनिर्वाणसंवत्.....तमे, विक्रमसंवत् .....तमे, ईसवी सन्.....तमे, वासरे.....नामधेयस्य (मम) आपणिकायां नूतन बहीशुभमुहूर्तं करिष्ये (कारयिष्ये) सर्वमंगलं भवतु, शांतिः पुष्टिस्तुष्टिर्भवतु सर्वऋद्धिसिद्धिभवतु स्वाहा।

नोट — यदि विस्तार से विधि करनी है तो 'श्रीनेमिचन्द्र' ज्योतिषाचार्य के लिखे अनुसार करना चाहिए यह आगे छपी है।

१. यह अगली विधि में दिया गया है।

नवदेवता पूजन

गीता छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य —**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेयो नमः।**

(९, २७ या १०८बार)

जयमाला

सोरठा

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हों।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकलजंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।२।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।३।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।

जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।७।।

दोहा

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।९।।

इत्याशीर्वादः।

भगवान महावीर पूजा

दोहा

स्वयंसिद्धलक्ष्मीपति, महावीर भगवान् ।
सर्व कर्म रिपु जीतकर, पाया पद निर्वाण।।१।।

वर्धमान, अतिवीर प्रभु, सन्मति वीर जिनेश।
आवो आवो अब यहाँ, पूरो आश महेश।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-उपेन्द्रवज्रा

गंगानदी नीर पवित्र लाया,
पादाम्बुजों में प्रभु के चढ़ाया।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन घिस के सुगंधी,
श्री सन्मतिपाद जजूँ अनंदी।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाणलक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफलोंसम सित धौत अक्षत,
प्रभु को चढ़ाते पद होत शाश्वत।

निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली अरविन्द लाके,
कामारिजेता प्रभु को चढ़ाके।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी पुआ घेवर मोदकादी,
क्षुधरोग नाशार्थ तुम्हें चढ़ा दी।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति तम को हरे है,
तुम आरती ज्ञान उदय करे है।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरू धूप सुगंध खेऊँ,
कर्मारि कर भस्म निजात्म सेवूँ।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर केला फल आम्र लाऊँ,
शिव सौख्य हेतू प्रभु को चढ़ाऊँ।

निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वापामीति स्वाहा।

नीरादि संयुक्त सुअर्घ्य माऊँ,
मोक्षैक हेतू तुमको चढ़ाऊँ।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ मैं,
निर्वाण लक्ष्मी सुख को भजूँ मैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य शांतीकर शांतिधारा,
श्री सन्मति के पदकंज धारा।
निज स्वांत शांतीहित शांतिधारा,
करते मिले है भवदधि किनारा।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ,
पुष्पांजली कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ,
शोकादि हरके सब सिद्धि पाऊँ।।११।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

गीता छंद

सिद्धार्थ राजा कुंडलपुर में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़शुक्ला छठ तिथि प्रभु, गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरआसनों कंपित हुए।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।२।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिरवदी दशमीतिथि, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।३।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य सूर्य उदित हुआ, प्रभु के अरी चउ नाशते।
बैशाखसित दशमीतिथी, प्रभु समवसृति में राजते।।
इन्द्रादिगण कैवल्य की, पूजा महोत्सव विधि करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजा ज्ञानकलि विकसित करें।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नोट —केवलज्ञान का अर्घ्य चढ़ाने के बाद निर्वाणकाण्ड पढ़कर पुनः निर्वाण कल्याणक का अर्घ्य पढ़कर निर्वाणलाडू चढ़ावें।

निर्वाण कल्याणक अर्घ्य

गीता छंद

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।

निर्वाणलक्ष्मी वरण कर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।५।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणी, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपतिसाकार।।१।।

(चाल —श्रीपति जिनवर करुणा.....)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर, महावीर वीर अतिवीर प्रभो।
जय जय गुणसागर वर्धमान, जय त्रिशलानंदन धीर प्रभो।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थ तनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।२।।

जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी-क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तू गण, आपस में मिलकर हरषायें।।३।।

चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुन्दर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।४।।

प्रभु सात हाथ उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।

भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्ष मार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।५।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाण श्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।६।।

घत्ताछंद

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिन गुण संपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।७।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

गीता छंद

महावीर की निर्वाण बेला, में भविक शुचि भाव से।
निर्वाण लक्ष्मीपति जिनेश्वर, पूजते अति चाव से।।
वे भव्य नर सुर के अतुल, संपत्ति सुख पाते घने।
फिर अन्त में शुचि ज्ञानमति, निर्वाण लक्ष्मीपति बनें।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

नोट —(सायंकाल बही पूजन के समय सरस्वती-लक्ष्मी की प्रतिमा विराजमान करके मंगलाष्टक पढ़कर यदि इच्छा हो और समय हो तो विनायक यंत्र का अभिषेक करके, नवदेवता पूजा करके श्री गौतम स्वामी की पूजा करें।)

निर्वाणकाण्ड भाषा

-गणिनी ज्ञानमती

चाल —हे दीन बंधु.....

वृषभेष गिरिकैलाश से निर्वाण पधारे।
चंपापुरी से वासुपूज्य मुक्ति सिधारे।।
नेमीश ऊर्जयंत से निर्वाण गये हैं।
पावापुरी से वीर परमधाम गये हैं।।१।।

इंद्रादिवंद्य बीस जिनेश्वर करम हने।
सम्मेद गिरि शिखर से शिव गये नमूँ उन्हें।।
इन चार बीस जिन की सदा वंदना करूँ।
निर्वाण सौख्य प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ।।२।।

बलभद्र सात और आठकोटि बताए।
यादवनरेन्द्र आर्ष में हैं साधु कहाये।।
गजपंथगिरिशिखर से ये निर्वाण गये हैं।
इनको नमूँ ये मुक्ति में निमित्त कहे हैं।।३।।

वरदत्त औ वरांग सागरदत्त मुनिवरा।
ऋषि और साढ़े तीन कोटि भव्य सुखकरा।।
ये तारवरनगर से मुक्तिधाम पधारे।
मैं नित्य नमूँ मुझको भी संसार से तारें।।४।।

श्री नेमिनाथ औ प्रद्युम्न शंभु कुमारा।
अनिरुद्धकुमर पा लिया भवदधि का किनारा।।
मुनिराज बाहत्तर करोड़ सात सौ कहे।
ये ऊर्जयंत गिरि से सभी मुक्ति को लहें।।५।।

दो पुत्र रामचंद्र के औ लाडनृपादी।
ये पाँचकोटि साधुवृंद निजरसास्वादी।।
ये पावागिरीवर शिखर से मोक्ष गये हैं।
भविवृंद के निर्वाण में ये हेतु कहे हैं।।६।।

जो पांडुपुत्र तीन और द्रविडनृपादी।
ये आठ कोटि साधु परम समरसास्वादी।।
शत्रुंजयाद्रि शिखर से ये सिद्ध हुए हैं।
इनको नमूँ ये सिद्धि में निमित्त हुए हैं।।७।।

श्रीराम हनूमान औ सुग्रीव मुनिवरा।
जो गव गवाख्य नील महानील सुखकरा।।
निन्यानवे करोड़ तुंगीगिरि से शिव गये।
उन सबकी वंदना से सर्व पाप धुल गये।।८।।

जो अंग औ अनंग दो कुमार हैं कहे।
वे साढ़े पाँच कोटि मुनि सहित शिव गये।।
सोनागिरी शिखर है सिद्धक्षेत्र इन्हों का।
इनको नमूँ इन भक्ति भवसमुद्र में नौका।।९।।

दशमुखनृपति के पुत्र आत्म तत्त्व के ध्याता।
जो साढ़े पाँच कोटि मुनि सहित विख्याता।।
रेवा नदी के तीर से निर्वाण पधारे।
मैं नित्य नमूँ मुझको भवोदधि से उबारें।।१०।।

चक्रीश दो दश कामदेव साधुपद धरा।
मुनि साढ़े तीन कोटि मुक्तिराज्य को वरा।।
रेवा नदी के तीर अपरभाग में सही।
मैं सिद्धवरसुकूट को वंदूँ जो शिवमही।।११।।

बड़वानि वरनगर में दक्षिणी सुभाग में।
है चूलगिरि शिखर जो सिद्धक्षेत्र नाम में।।
श्री इन्द्रजीत वुंभकरण मोक्ष पधारे।
मैं नित्य नमूँ उनको सकल कर्म विडारें।।१२।।

पावागिरी नगर में चेलनानदी तटे।
मुनिवर सुवर्णभद्र आदि चार शिव बसे।।
निर्वाण भूमि कर्म का निर्वाण करेगी।
मैं नित्य नमूँ मुझको परम धाम करेगी।।१३।।

फलहोड़ी श्रेष्ठ ग्राम में पश्चिम दिशा कही।
श्री द्रोणगिरि शिखर है परमपूत भू सही।।
गुरुदत्त आदि मुनिवरेन्द्र मृत्यु के जयी।
निर्वाण गये नित्य नमूँ पाऊँ शिव मही।।१४।।

श्री बालि महाबालि नागकुमर आदि जो।
अष्टापदाद्रि शिखर से निर्वाण प्राप्त जो।।
उनको नमूँ वे कर्म अद्रि चूर्ण कर चुके।
वे तो अनंत गुण समूह पूर्ण कर चुके।।१५।।

अचलापुरी ईशान में मेढ़ागिरी कही।
मुनिराज साढ़े तीन कोटि उनकी शिव मही।।
मुक्तागिरी निर्वाण भूमि नित्य नमूँ मैं।
निर्वाण प्राप्ति हेतु अखिल दोष वमूँ मैं।।१६।।

वंशस्थली नगर के अपरभाग में कहा।
कुंथलगिरी शिखर जगत में पूज्य हो रहा।।
श्री कुलभूषण औ देशभूषण मुक्ति गये हैं।
मैं नित्य नमूँ उनको वे कृतकृत्य हुए हैं।।१७।।

जसरथनृपति के पुत्र और पाँच सौ मुनी।
निर्वाण गए हैं कलिंग देश से सुनी।।
मुनिराज एक कोटि कोटिशिला से कहे।
निर्वाण गए उनको नमूँ दुःख ना रहे।।१८।।

श्री पार्श्व के समवसरण में जो प्रधान थे।
वरदत्त आदि पाँच ऋषी गुण निधान थे।।
रेसिंदिगिरि शिखर से वे निर्वाण पधारे।
मैं उनको नमूँ वे सभी संकट को निवारें।।१९।।

जिस जिस पवित्र थान से जो जो महामुनी।
निर्वाण परम धाम गये हैं अतुलगुणी।।
मैं उन सभी की नित्य भक्ति वंदना करूँ।
त्रिकरण विशुद्ध कर नमूँ शिवांगना वरूँ।।२०।।

मुनिराज शेष जो असंख्य विश्व में कहे।
जिस जिस पवित्र थान से निर्वाण को लहें।।
उन साधुओं की, क्षेत्र की भी वंदना करूँ।
संपूर्ण दुःख क्षय निमित्त प्रार्थना करूँ।।२१।।

श्री पार्श्वनागद्रह में कहे उनको मैं नमूँ।
श्री मंगलापुरी में अभिनंदनं नमूँ।।
पट्टण सुआशारम्य में मुनिसुव्रतेश को।
है बार-बार वंदना इन श्री जिनेश को।।२२।।

पोदनपुरी में बाहुबली देव को नमूँ।
श्री हस्तिनापुरी में शांति-कुंथु-अर नमूँ।।
वाराणसी में श्री सुपार्श्व पार्श्व जिन हुए।
उनकी करूँ मैं वंदना वे सौख्यकर हुए।।२३।।

मथुरा में श्री वीर को नाऊँ सुभाल मैं।
अहिछत्र में श्री पार्श्व को वंदूँ त्रिकाल मैं।।
जंबूमुनीन्द्र जंबूविपिनगहन में आके।
निर्वाण प्राप्त हुए नमूँ शीश झुकाके।।२४।।

जो पंचकल्याणक पवित्र भूमि कही है।
इस मध्यलोक में महान तीर्थ सही है।।
मनवचसुकायशुद्धि सहित शीश नमाके।
मैं नित्य नमस्कार करूँ हर्ष बढ़ाके।।२५।।

श्री वरनगर में पूज्य अर्गलदेव को वंदूँ।
उनके निकट श्री कुंडली जिनेश को वंदूँ।।
शिरपुर में पार्श्वनाथ को मैं भाव से नमूँ।
लोहागिरी के शंखदेव नेमि को नमूँ।।२६।।

जो पाँच सौ पचीस धनुष तुंग तनु धरें।
केशर कुसुम की वृष्टि जिनपे देवगण करें।।
उन गोमटेश देव की मैं वंदना करूँ।
निज आत्म सौख्य प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ।।२७।।

निर्वाणथान मध्यलोक में भी जो कहे।
अतिशय भरे अतिशय स्थान जगप्रथित रहें।।
इन सिद्धक्षेत्र सर्व को ही शीश झुकाके।
मैं बार बार नमन करूँ ध्यान लगाके।।२८।।

जो भव्य जीव भावशुद्धि सहित नित्य ही।
निर्वाणकाण्ड को पढ़ें त्रिकाल में सही।।
चक्रीश इन्द्रपद के वे सुखानुभव करें।
पश्चात् परमानन्दमय निर्वाणपद वरें।।२९।।

अंचलिका —कुसुमलताछंद

भगवन् ! परिनिर्वाण भक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाहूँ मैं रुचि से।।
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल उसी के अंतिम में।
तीन वर्ष अरु आठ मास इक, पक्ष शेष था जब उसमें।।१।।

पावानगरी में कार्तिक शुभ, मास कृष्ण चौदश तिथि में।
रात्रि अंत नक्षत्र स्वाति सह, उषाकाल की बेला में।।
वर्धमान भगवान् महति महावीर सिद्धि को प्राप्त हुए।
तीनलोक के भावन व्यंतर, ज्योतिष कल्पवासिगण ये।।२।।

निज परिवार सहित चउविध सुर, दिव्य गंध दिव पुष्पों से।
दिव्यधूप दिव चूर्णवास औ, दिव्य स्नपन विधी करते।।
अर्चें पूजें वंदन करते, नमस्कार भी नित करते।
परिनिर्वाण महा कल्याणक, पूजा विधि रुचि से करते।।३।।

मैं भी यहीं मोक्ष कल्याणक, की नित ही अर्चना करूँ।
पूजन वंदन करूँ भक्ति से, नमस्कार भी पुनः करूँ।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुणसंपत्ति होवे।।४।।

गौतम गणधर पूजा

गीता छंद

गणपति गणीश गणेश गणनायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप आदि नाम प्रधान हैं।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम स्वामि गणधर को जजूँ।
स्थापना करके यहाँ सब कार्य में मंगल भजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-नन्दीश्वर पूजन चाल

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे।
तुम चरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे।
तुम पद पूजा तत्काल, अंतर्ताप हरे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी सेव, उत्तम फल लाऊँ।
गणनाथ चरण युगपूज, वांछित फल पाऊँ।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।८।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूँ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

वकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर मैं।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूँ इक पल में।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य — ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने नमः (१०८ या ९ बार)।

जयमाला

दोहा

परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।
गाऊँ तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण।।१।।

रोला छंद

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवसरण में नामी।।
जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा।।२।।
इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा।।३।।
छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखठानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया।।४।।
मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूँ मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चहूँ मैं।।५।।
त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।
चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूँगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूँगा।।६।।
उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन ''जयतु भगवान्'' स्तुति रूप उचारा।।७।।

निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना।।
द्वादशांग मय ग्रंथ, गौतम गुरु ने कीने।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।८।।

वीर प्रभू निर्वाण, के दिन केवल पायो।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इन्द्र रचे हैं।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजे हैं।।९।।

इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में।
गणपति लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है।।१०।।

गणधर पूजा सत्य, सर्वसंपदा देवें।
धन धान्यादिक पूर, मोक्ष संपदा देवें।।
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजे हैं।
''केवलज्ञान'' प्रकाश, हेतू आप भजे हैं।।११।।

दोहा

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूँ महान् ।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः।

केवलज्ञान महालक्ष्मी पूजा

स्थापना (गीता छन्द)

कैवल्यज्ञान महान लक्ष्मी, त्रय जगत में मान्य है।
सब लोक और अलोक जिसमें, एक अणु समान है।।
जिस चाह से सब साधुगण, भी सेवते परमात्म को।
उस महालक्ष्मी को जजूँ, करके मुदा आह्वान को।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मी ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मी ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नरेन्द्र छन्द

गंगानदि का पावन जल ले, कंचनभृंग भरूँ मैं।
ज्ञानभानु गुण पूजन करके, भव भव त्रास हरूँ मैं।।
केवलज्ञान महालक्ष्मी को, नित पूजूँ हरषाऊँ।
सुख संपति सौभाग्य प्राप्तकर, शिवलक्ष्मी को पाऊँ।।१।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध कंचन के द्रवसम, कनक कटोरी भरिये।
ज्ञानसूर्य का अर्चन करके, पूर्ण शांति को वरिये।।केवल.।।२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंधुफेन सम उज्जवल अक्षत, धौत अखंडित लाऊँ।
पूरण गुणमणि अर्चन हेतू, रुचि से पुंज चढ़ाऊँ।।केवल.।।२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुल मालती पारिजात के, पुष्प सुगंधित लाऊँ।
मदन विनाशक ज्ञानभानु की, पूजा नित्य रचाऊँ।।केवल.।।४।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीचूर सु लाडू घेवर, फेनी आदि बनाके।
क्षुधा वेदनी दूर करन को, जजूँ ज्ञान गुण गाके।।केवल.।।५।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक कर्पूर ज्योति से, करूँ आरती रुचि से।
अंतर में श्रुतज्ञान पूर्ण कर, जजूँ भारती मुद से।।केवल.।।६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित अग्नि पात्र में, खेऊँ कर्म जलाऊँ।
परमज्योति की पूजा करके, सौख्य अपूरब पाऊँ।।केवल.।।७।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम्र अंगूर फलों से, पूजूँ हर्ष बढ़ाऊँ।
ज्ञानज्योति का अर्चन करके, मोक्ष महाफल पाऊँ।।केवल.।।८।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल लाऊँ।
जिनगुण लक्ष्मी की पूजाकर, रत्नत्रयनिधि पाऊँ।।केवल.।।९।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

ज्ञानमहानिधि हेतु, ज्ञान महालक्ष्मी भजूँ।
शांतीधारा देत, आत्यंतिक शांती वरूँ।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के वर पुष्प, लेय महालक्ष्मी जजूँ।
पुष्पांजलि से शीघ्र, प्राप्त करूँ सुख संपदा।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै नमः।

जयमाला

दोहा

पूर्णज्ञान लक्ष्मी महा, मुक्ति सहेली सिद्ध।
गाऊँ जयमाला अबे, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।१।।

चाल —हे दीनबंधु---------

जय जय अनंत गुण समूह सौख्य करंता।
जय जय श्री अरिहंत घातिकर्म के हंता।।
जय जय अनंतदर्श ज्ञानवीर्य सुख भरें।
जय जय समवसरण विभूति सर्व निधि धरें।।२।।

केवलरमा को सेवतीं संपूर्ण ऋद्धियाँ।
उस आगे आगे दौड़ती हैं सर्व सिद्धियाँ।।
सब भूत भविष्यत् व वर्तमान को लखें।
पर्याय सभी गुण सभी तत्काल इव दिखें।।३।।

दर्पण समान स्वच्छज्ञान में जगत् दिखे।
त्रैलोक्य अरु अलोक प्रतिबिम्ब सम दिपे।।
संपूर्ण प्रदेशों से दर्शज्ञान प्रगटता।
व्यवधान रहित ज्ञान अतीन्द्रिय विलसता।।४।।

पंचेन्द्रियाँ औ मन भी सहायक नहीं वहाँ।
कैवल्यज्ञान इसी से असहाय है यहाँ।।
प्रतिपक्ष रहित एक अकेला स्वतंत्र है।
इससे ही आतमा का राज्य एकतंत्र है।।५।।

इसके अनंत चमत्कार आर्ष में कहे।
शाश्वत अनंत सौख्य का भंडार यह रहे।।

कैवल्य के गुणों को कोई गा नहीं सके।
मां शारदा गणधर गुरू भी हारकर थके।।६।।

फिर भी हुआ वाचाल मैं गुणगान कर रहा।
पीयूष एक कण भी मिले सौख्य कर अहा।।
हे नाथ! बात एक मेरी राख लीजिये।
'कैवल्यज्ञानमती' रवि प्रभात कीजिये।।७।।

दोहा

केवलज्ञान महान् में, लोकालोक समस्त।
इक नक्षत्र समान है, नमूँ नमूँ सुखमस्तु।।८।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

केवलज्ञान महालक्ष्मी की, पूजा नित्य करें जो।
इस जग में धन धान्य रिद्धि निधि, लक्ष्मी वश्य करें सो।।
दीपावलि दिन लक्ष्मी हेतू, इस लक्ष्मी को ध्याके।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी को, वरें सर्वसुख पाके।।१।।

इत्याशीर्वादः।

दीपावली पूजा की विधि

(व्रततिथि निर्णय से उद्धृत)

दुकान या बड़े फर्म के वसना मुहूर्त-लक्ष्मी पूजन करने के पूर्व अष्टद्रव्य तैयार कर चौकियों पर रख लें। एक चौकी पर मंगल कलश की स्थापना करें। गद्दी पर बहीखाता, दवात-कलम, नवीन वस्त्र, रुपयों की थैली आदि रखें। प्रथम मंगलाष्टक पढ़कर रखी हुई सभी वस्तुओं पर पुष्प अर्पण करें। अनन्तर स्वस्ति विधान, देवशास्त्र-गुरु का अर्घ, पंचपरमेष्ठी पूजन, नवदेवता पूजन, महावीर स्वामी पूजन, गणधर पूजन करें। अनन्तर बहियों पर साथिया बनाने के उपरात "श्री ऋषभाय नमः", "श्री महावीराय नमः", "श्री गौतम गणधराय नमः", "श्री केवलज्ञानसरस्वत्यै नमः" और "श्री लक्ष्म्यै नमः" लिखकर "श्रीवर्द्धताम्" लिखें। अनन्तर निम्नाकार में श्री का पर्वत बनावें।

थैली में स्वस्तिक बनाने का नियम

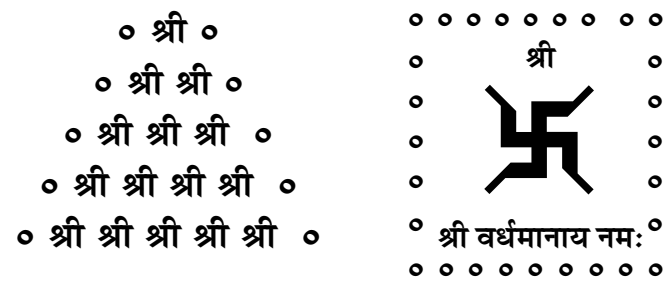

इसके पश्चात् "श्री देवाधिदेव श्री महावीरनिर्वाणात् .....तमे वीराब्दे श्री.....तमे विक्रमाब्दे.....ईसवीय संवत्सरे शुभलग्ने स्थिर मुहूर्ते श्री जिनार्चन विधाय अद्य कार्तिक-कृष्णामावस्यायां शुभवासरे लाभवेलायां

नूतनवसनामुहूर्तं करिष्ये''।

सब बहियों पर यह लिखकर पान, लड्डू, सुपाड़ी, पीली सरसों, दूर्वा और हल्दी रखें पश्चात् ''श्री वर्धमानाय नमः, श्री महालक्ष्म्यै नमः, ऋद्धिः सिद्धिर्भवतुतराम्,'' केवलज्ञानलक्ष्मीदेव्यै नमः, मम सर्वसिद्धिर्भवतु, काममांगल्योत्सवाः सन्तु, पुण्यं वर्द्धताम्'' पढ़कर बहीखातों पर अर्घ्य चढ़ावें अनन्तर मंगल कलश वाली चौक पर रुपयों की थैली को रखकर उसमें ''श्री लीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं वाग्देवीनिकेतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत्। सः स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयम्''। श्लोक पढ़कर साथिया बनावे पश्चात् लक्ष्मीपूजन करें और लक्ष्मीस्तोत्र, पुण्याहवाचन, शान्ति-विसर्जन करें।

वीर निर्वाण संवत्सर पूजा

(नव वर्ष की पूजा)

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

(दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक शु. एकम को यह पूजन करके अपने वर्ष को मंगलमय करें)

स्थापना-शंभु छंद

श्री वीरप्रभू को वन्दन कर, उनके शासन को नमन करूँ।
नववर्ष हुआ प्रारंभ वीर, निर्वाण सुसंवत् नमन करूँ।।
यह संवत् हो जयशील धरा पर, यही प्रार्थना जिनवर से।
इस अवसर पर प्रभु पूजन कर, प्रारंभ करूँ नवजीवन मैं।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीर-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीर-जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अष्टक

तर्ज —धीरे धीरे बोल कोई सुन ना ले.....

नया साल आया अभिनन्दन कर लो,
वन्दन कर लो प्रभु वन्दन कर लो।
यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है।। नया साल.....।।
वीर प्रभू ने मोक्षधाम को पा लिया,
इन्द्रों ने तब दीपावली मना लिया।
भक्तों ने उन पूजाकर सुख पा लिया,
हमने प्रभुचरणों में जलधारा किया।।

अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है। नया साल.....।।१।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मति ने संताप ताप को दूर कर,
शाश्वत शीतलता पाई गुण पूर कर।
मेरा हो नव वर्ष सदा सुखशान्तिमय,
इसीलिए चन्दन पूजा है कान्तिमय।।
अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है।। नया साल.....।।२।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाया हे जिनवर आपने,
निज कीरत अक्षय कर दी प्रभु आपने।
मैं अक्षत के पुंज चढ़ाऊँ सामने,
हो यह संवत्सर अक्षय संसार में।।
अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है।।नया साल.....।।३।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम भोग की बन्ध कथा तुम तज दिया,
आत्मरमण निर्बन्ध कथा को भज लिया।
पुष्प चढ़ाकर मैंने प्रभु चिन्तन किया,
हो पुष्पित यह संवत्सर सबके हिया।।
अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है।। नया साल.....।।४।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग का भोजन किया पुनः मुनि बन गए,
कवलाहार तजा तब तुम जिन बन गए।
भक्त चढ़ा नैवेद्य आज यह कह रहे,
यह संवत्सर जग में दिव्यकथा कहे।।
अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है। नया साल.....।।५।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तिशाली विद्युत का आलोक है,
उसमें नहीं झलकता आतमलोक है।
दीपक पूजा दूर करे सब शोक है,
इस संवत्सर पर प्रभुपद में ढोक है।।
अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीरप्रभू की देन है।। नया साल.....।।६।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि से प्रभु ने कर्म जला दिए,
संसारी प्राणी ने कर्म बढ़ा लिए।
अब मैं धूप जलाऊँ प्रभु के सामने,
हो यह संवत्सर मुझ मंगल कारने।।
अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है।। नया साल.....।।७।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम, सेव, अंगूर बहुत फल खा लिए,
अब प्रभु तुम ढिग उत्तम फल ले आ गए।
इस फल की थाली से मैं अर्चन करूँ,
नूतन संवत्सर में जिनवन्दन करूँ।।

अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है।।नया साल.....।।८।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य को रत्नथाल में भर लिया,
प्रभु चरणों में उसको अर्पण कर दिया।
मैंने यह ''चन्दना'' आज निश्चय किया,
यह जिनशासन सदा रहे मेरे हिया।।
अभिनन्दनं, प्रभुवन्दनं, यह वीर संवत् प्राचीन है,
महावीर प्रभू की देन है।।नया साल.....।।९।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा — **वीर संवत् निर्वाण का, है माहात्म्य अचिन्त्य।**
इसीलिए प्रभुचरण में, शान्तीधार करन्त।।
शांतये शांतिधारा।

महावीर की वाटिका, गुणपुष्पों से युक्त।
नये वर्ष को कर रहे, पुष्पों से संयुक्त।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज —हम लाए हैं तूफान से.....

यह नव प्रकाश विश्व में आलोक भरेगा।
नववर्ष जगत के समस्त शोक हरेगा।।
जिनधर्म प्राकृतिक अनादिनिधन कहा है।
सब प्राणिमात्र के लिए हितकारि कहा है।।
इसकी शरण से चतुर्गति रोग टरेगा।
नववर्ष जगत के समस्त शोक हरेगा।।१।।
कृतयुग के तीर्थंकर प्रथम वृषभेश हुए हैं।
फिर और तीर्थंकर परम तेईस हुए हैं।।

इन सबकी भक्ति से जनम का रोग टरेगा।
नववर्ष जगत के समस्त शोक हरेगा।।२।।
अंतिम प्रभू महावीर ने जब जन्म लिया था।
हिंसा को मिटाकर धरा को धन्य किया था।।
उन नाम मंत्र से विघन व रोग टरेगा।
नववर्ष जगत के समस्त शोक हरेगा।।३।।
तप करके महावीर ने शिवधाम पा लिया।
देवों ने पावापुर में दीवाली मना लिया।।
यह पर्व हृदय में सदा आलोक भरेगा।
नववर्ष जगत के समस्त शोक हरेगा।।४।।
वह कार्तिकीमावस का दिवस धन्य हुआ था।
तब से ही प्रतिपदा को नया वर्ष हुआ था।।
यह ''चन्दनामती'' सभी में सौख्य भरेगा।
नववर्ष जगत के समस्त शोक हरेगा।।५।।
तुम सब इसी संवत् से कार्य को शुरू करो।
अन्तर व बाह्य लक्ष्मी का भरपूर सुख भरो।।
अनुपम मनुज जन्म को नीरोग करेगा।
नववर्ष जगत के समस्त शोक हरेगा।।६।।

*दोहा —***नये वर्ष आरंभ में, प्रभु की यह जयमाल।**
अर्पण कर जिनचरण में, करूँ वर्ष खुशहाल।।७।।

ॐ ह्रीं नववर्षाभिनन्दनकारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नये वर्ष की नई भेंट यह, प्रभु चरणों में अर्पण है।
संवत्सर पच्चिस सौ तेइस, के दिन किया समर्पण है।।
गणिनी माता ज्ञानमती की, शिष्या इक ''चन्दनामती''।
उनकी यह शुभ रचना पढ़कर, प्राप्त करो निज ज्ञानमती।।
इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।

भगवान महावीर निर्वाणभूमि

श्री पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना (चौबोल छंद)

महावीर प्रभु जिस धरती से, कर्मनाश कर मोक्ष गये।
सिद्धशिला के स्वामी बनकर, सब कर्मों से छूट गये।।
पावापुर निर्वाणभूमि, तीरथ का अर्चन करना है।
आह्वानन स्थापन करने, जलमंदिर में चलना है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छंद)

प्रभुवर ने जन्म जरा मृत्यू का, नाश किया शिवपद पाया।
जलधारा इसीलिए करने को, वीरचरण में मैं आया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मतिजिन ने संसारताप को, तप के द्वारा नष्ट किया।
मैंने शीतल चन्दन लेकर, जिनवर के पद में चर्च दिया।।

निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर तन द्वारा वीर प्रभू ने, अविनश्वर पद को पाया।
मोती सम अक्षत पुंजों को, इसलिए चढ़ाने मैं आया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यौवन में भी प्रभु वर्धमान को, विषयभोग नहिं लुभा सके।
वे पुष्प भी महिमाशाली हैं, जो प्रभुपद में हम चढ़ा सके।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उग्रोग्र तपस्या के द्वारा, प्रभु ने क्षुधरोग विनाश किया।
मैंने नैवेद्य थाल द्वारा, प्रभु पूजन में विश्वास किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मति ने शुक्लध्यान द्वारा,निज मोहकर्म का नाश किया।
घृतदीप जला आरति करके, मैंने निज ज्ञान प्रकाश किया।।

निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान अग्नि में घातिकर्म को, भस्म वीर ने कर डाला।
मैंने उनके सम्मुख अग्नी में, धूप जलाकर सुख माना।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर घाति अघाती कर्म नाश, प्रभु ने मुक्तीफल प्राप्त किया।
मैंने शिवफल की आशा से, प्रभु को अर्पित फल थाल किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस वसुधा से प्रभु महावीर ने, अष्टम वसुधा प्राप्त किया।
''चन्दनामती'' उस वसुधा को, दे अर्घ्य सहज सुख प्राप्त हुआ।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद

पावापुरी सरोवर से स्वच्छ जल लिया।
प्रभु वीर के चरण में त्रयधार कर दिया।।

त्रयरत्न प्राप्ति हेतु मैंने प्रभु शरण लिया।
त्रयताप शांति हेतु मैंने यह यतन किया।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

पावापुरी सरोवर कमलों से भरा है।
कुछ पुष्प वही लेके मैंने थाल भरा है।।
पुष्पांजलि कर वीर प्रभु से याचना करूँ।
आतम गुणों की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा

जलमंदिर में हैं बने, वीर चरण प्राचीन।
उनको अर्घ्य चढ़ाय मैं, करूं प्रदक्षिण तीन।।१।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे भगवन्महावीर-चरणकमलयोः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौतम गणधर के चरण, पूजूँ मैं चितलाय।
केवलज्ञान हुआ वहीं, नमूँ मोह नश जाय।।२।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे गौतमगणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य सुधर्मा स्वामि के, गणधर चरण महान।
उनको अर्घ्य चढ़ाय मैं, पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।३।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे श्रीसुधर्मास्वामि-गणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमंदिर प्रांगण विषै, कई जिनालय जान।
उनमें स्थित बिम्ब सब, पूजूँ करूँ प्रणाम।।४।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रस्यदिगम्बरजिनमंदिरपरिसरे निर्मित जिनालयेषु विराजित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

जलमंदिर के सम्मुख इक पांडुकशिला नाम उद्यान कहा।
प्रभु महावीर की खड्गासन प्रतिमा, से वह जिनधाम रहा।।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती ने, पुण्य कार्य यह कर डाला।
उन महावीर को अर्घ्य चढ़ा, मैं जपूँ वीर की ही माला।।५।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रे जलमंदिरसम्मुखे विराजमान तीर्थंकरमहावीर खड्गासन जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

जाप्य मंत्र— **ॐ ह्रीं पावापुरीनिर्वाणभूमिपवित्रीकृतायश्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

स्रग्विणी छंद

अर्चना मैं करूँ पावापुरि तीर्थ की, जो है निर्वाणभूमी महावीर की।
वन्दना मैं करूं पावापुरि तीर्थ की, जो है कैवल्यभूमी गणाधीश की।।टेक.।।
जैनशासन के चौबीसवें तीर्थंकर, जन्मे कुण्डलपुरी राजा सिद्धार्थ घर।
रानी त्रिशला ने सपनों का फल पा लिया, बोलो जय त्रिशलानंदन महावीर की।।१।।
वीर वैरागी बनकर युवावस्था में, दीक्षा ले चल दिये घोर तप करने को।
मध्य में चन्दना के भी बंधन कटे, बोलो कौशाम्बी में जय महावीर की।।२।।
प्रभु ने बारह बरस तक तपस्या किया, केवलज्ञान तब प्राप्त उनको हुआ।
राजगिरि विपुलाचल पर प्रथम दिव्यध्वनि, खिर गई बोलो जय जय महावीर की।।३।।
तीस वर्षों में, प्रभु का भ्रमण जो हुआ, सब जगह समवसरणों की रचना हुई।
पावापुर के सरोवर से शिवपद लिया, बोलो जय पावापुर के महावीर की।।४।।
मास कार्तिक अमावस के प्रत्यूष में, कर्मों को नष्ट कर पहुँचे शिवलोक में।
तब से दीपावली पर्व है चल गया, बोलो सब मिल के जय जय महावीर की।।५।।

पावापुर के सरोवर में फूले कमल, आज भी गा रहे कीर्ति प्रभु की अमर।
वीर प्रभु के चरण की करो अर्चना, बोलो जय सिद्ध भगवन् महावीर की।।६।।
पंक में खिल के पंकज अलग जैसे हैं, मेरी आत्मा भी संसार में वैसे है।
उसको प्रभु सम बनाने का पुरुषार्थ कर, जय हो अंतिम जिनेश्वर महावीर की।।७।।
पूरे सरवर के बिच एक मंदिर बना, जो कहा जाता जल मंदिर है सोहना।
पारकर पुल से जाकर करो वंदना, बोलो जय पास जाकर महावीर की।।८।।
लोग प्रतिवर्ष दीपावली के ही दिन, पावापुर में मनाते हैं निर्वाणश्री।
भक्त निर्वाणलाडू चढ़ाते जहाँ, बोलो उस भूमि पर जय महावीर की।।९।।
वीर के शिष्य गौतम गणीश्वर ने भी, पाया कैवल्यपद वीर सिद्धि दिवस।
पूजा महावीर के संग करो उनकी भी, बोलो गौतम के गुरु जय महावीर की।।१०।।
पावापुर में नमूँ वीर के पदकमल, और गौतम, सुधर्मा के गणधर चरण।
''चन्दनामति'' चरणत्रय का अर्चन करो, बोलो जयरत्नत्रयपति महावीर की।।११।।
थाल पूर्णार्घ्य का यह सजाया प्रभो, मैंने जयमाल में वह चढ़ाया प्रभो।
इससे आतमविशुद्धी बढ़े नित्य ही, भाव से बोलो जय प्रभु महावीर की।।१२।।
धाम सिद्धी स्वयंवर का है तीर्थ ये, जिसने प्रभु वीर से पाई यशकीर्ति है।।
यदि वरण करना है वैसी सिद्धी प्रिया, अर्चना कर लो पावापुरी तीर्थ की।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

दोहा

सिद्धभूमि महावीर की, पूजा है सुखकार।
पावापुरिवर तीर्थ को, वन्दन बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज —कभी तू.....

मुझे पावापुर जाना है, मुझे जलमंदिर जाना है,
वहाँ लाडू चढ़ाकर, दीवाली का पर्व मनाना है।
जय जय दीवाली हो.....जय जय दीवाली.....।।टेक.।।

महावीर प्रभु कर्म नाशकर, मोक्षधाम जब पहुँचे।
पावापुर के जलमंदिर में, देव इन्द्र सब पहुँचे-देव इन्द्र सब पहुँचे।
उनकी ही यादों में, अब दीप जलाना है।
घर घर में धन लक्ष्मी का, भण्डार भराना है।।मुझे.।।१।।

वह पावापुरी सरोवर, अब तक भी लहर रहा है।
प्राचीन वहाँ जलमंदिर, का उपवन महक रहा है, हाँ उपवन महक रहा है।
आती है याद वहाँ, महावीर प्रभू जी की।
जिनको वन्दन करती, है भारत की धरती।।मुझे.।।२।।

महावीर वीरसंवत्सर, मंगलमय हो सब जग में।
निर्वाण की ही स्मृति में, जो शुरू हुआ भारत से.....जो शुरू.....
''चन्दनामती'' सबको, दीवाली मंगल हो।
जीवन में हरक्षण सबके, नव खुशियाँ शामिल हों।।मुझे.।।३।।

BHAJAN

Written by-Pragyashramni
Aryika Chandnamati

MUSIC- Kabhi Too.....

I will go to Pavapur, there is Temple Jalmandir
After offering Ladu I will celebrate Diwali,
Be Happy Diwali, Be Happy Diwali.....
Tirthankar Mahavir attained, Liberation from there.
Saudharm Indra and Devas, came there from heaven came.....
Men Women were praying, all being were praying,
Give me Knowledge Vira,
Give me Knowledge Vira.....
I will go...(1)
The largest lamp series, burnt Saudharma Indra then,
That day Kartik Mavas is, called Diwali from then..... called.....
So Jaina tradition, this Diwali function,
Celebrate Diwali in memory Mahavira....
I will go to pavapur.....(2)
Nation is bowing his head, to Tirthankar Vira.
And remembering his teaching, Non-Violence of Vira... Non.....
Be happiness in world, be peaceful Universe,
"Chandnamati" all of world, accept Lord Vira....
I will go pavapur.....(3)
I will go to pavapur, there is temple Jalmandir,
After offering Ladu I will celebrate Diwali....
Be Happy Diwali, Be Happy Diwali.....Diwali

भजन

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

(तर्ज —मेरे देश की धरती.....)

कुण्डलपुर धरती वीरप्रभू के जन्म से धन्य हुई है
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।टेक.।।

छब्बिस सौ वर्षों पूर्व जहाँ, धनपति ने रतन बरसाये थे।
रानी त्रिशला के सपने सुन, सिद्धार्थराज हरषाये थे।।
तीर्थंकर सुत को पाकर त्रिशला माता धन्य हुई है।।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।१।।

पलने में देख वीर प्रभु को, मुनियों की शंका दूर हुई।
इक देव सर्प बनकर आया, उसकी शक्ती भी चूर हुई।
कुण्डलपुर की ये सत्य कथाएं जिन आगम में कही हैं।।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।२।।

गणिनी माताश्री ज्ञानमती के, चरण पड़े कुण्डलपुर में।
अतएव वहाँ पर नंद्यावर्त, महल मंदिर भी शीघ्र बने।।
महावीर जन्मभूमि विकास की घड़ियां धन्य हुई हैं।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।३।।

उस जन्मभूमि के दर्शन कर, तुम भी निज शंका दूर करो।
महावीर प्रभू के सन्मुख अपनी, इच्छाएँ परिपूर्ण करो।।
''चन्दनामती'' उसके दर्शन पाकर के धन्य हुई है।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।४।।

श्री महावीर भगवान की आरती

तर्ज –नागिन धुन.....

जय वीरप्रभो, महावीर प्रभो, की मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूं आरतिया।। टेक.।।
सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रत्न बरसाये।।प्रभू जी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हर्षी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।१।।
धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहां प्रभु लीना।
चैत सुदी तेरस के दिन वहां, इन्द्र महोत्सव कीना।।प्रभू जी.।।
थे नाथ वंश, के भूषण तुम, बस एक मात्र अवतार थे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।२।।
यौवन में दीक्षा धारणकर, राजपाट सब त्यागा।
मगसिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा।।प्रभू जी.।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।३।।
शुक्ल दशमि बैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था। प्रभू जी.।।
तब दिव्यध्वनी, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूं आरतिया।।४।।
पावापुरि सरवर में प्रभु ने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था।। प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूं आरतिया।।५।।
वर्धमान सन्मति अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योती भर दो।। प्रभू जी.।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूं आरतिया।।६।।